चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय,
हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक भास्कर	11.4.23	2	2-5

jabkesari.in (हिसार केसरी)

नया जीवन चुनौतियों से भरा, लेकिन अवसर भी बहुत आएंगे : कुलपति प्रो. काम्बोज

हांसी के राजकीय महाविद्यालय में हुआ 27वां दीक्षांत समारोह, प्राचार्य डॉ. रामप्रताप व स्टाफ सदस्यों ने फूलमालाओं से किया अभिनंदन

हांसी,10 अप्रैल (भुटानी): शिक्षा के द्वारा ही आंतरिक शक्तियों का उत्तरोत्तर विकास होता है।जीवन के अनुभव व संस्कारों से हमारे व्यवहार में बदलाव आता है। शिक्षक, शिक्षा का एक ध्रुव है और दूसरा ध्रुव विद्यार्थी हैं। यह बात गुरु जम्भेश्वर विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय हिसार के कुलपति प्रोफैसर बलदेव राज काम्बोज ने आज यहां के राजकीय महाविद्यालय के 27 वें दीक्षांत समारोह में अपने संबोधन में कही। महाविद्यालय में पहुंचने पर प्राचार्य डॉ रामप्रताप व स्टाफ सदस्यों ने प्रोफैसर बलदेव राज काम्बोज का फूलमालाओं से शानदार अभिनंदन एवं स्वागत किया ।

प्रोफैसर बलदेव राज काम्बोज ने दीक्षांत भाषण में उपाधिधारकों को प्रेरित करते हुए कहा कि आज का दिन वर्षों की कड़ी मेहनत, समर्पण व दृढ़ता का परिणाम है । आने वाले वर्षों में आप समाज के लिए बहुमूल्य योगदान देंगे। आपकी शिक्षा यहीं समाप्त नहीं होती, सीखना आजीवन प्रक्रिया है । दुनिया अवसरों व संभावनाओं से भरी है । नया जीवन चुनौतियों से भरा है लेकिन अवसर भी बहुत आएंगे ।

हांसी स्थित राजकीय महाविद्यालय के दीक्षांत समारोह में शिक्षकों से परिचय करते कुलपति प्रोफैसर बलदेव राज काम्बोज। (भुटानी)

प्रोफैसर बलदेव राज काम्बोज ने कहा कि आपको शिक्षा ग्रहण करने के बाद समाज सेवा व राष्ट्र सेवा में अपने आप को झोंकना होगा, तभी हम सर्वोपरि राष्ट्र को पाएंगे, जिसकी हमने कल्पना की है। उन्होंने कहा कि आज भारतवर्ष युवा शक्ति की ओर देख रहा है। उन्होंने यह भी कहा कि समाज सेवा के लिए विद्यार्थियों को तैयार करने में शिक्षकों का भी बहुत बड़ा योगदान है और वे बधाई के पात्र हैं ।इस अवसर पर उन्होंने उपाधियां वितरित की।

महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. रामप्रताप ने प्रोफैसर बलदेव राज काम्बोज का अभिनंदन करते हुए कहा कि यहां से शिक्षा ग्रहण कर निकलने वाले विद्यार्थी समाज में अच्छी भूमिका का निर्वहन कर रहे हैं। इस कार्यक्रम में 284 विद्यार्थियों को उपाधियां प्रदान की गईं। इसमें कला संकाय से 158, वाणिज्य संकाय से 52 तथा विज्ञान संकाय से 74 विद्यार्थियों को उपाधि से विभूषित किया गया। कार्यक्रम के अंत में संयोजक सुमन मलिक ने मुख्य अतिथि तथा सभी मेहमानों का महाविद्यालय आगमन पर धन्यवाद किया।

इस अवसर पर प्रो शामेन्द्र सिंह बामल, प्रो राजकुमार, प्रो किशन पाल, प्रो शिव रतन मित्तल, प्रो कर्मबीर सिंह, प्रो बंता सिंह जांगड़ा, प्रो. रजनी सैनी, डॉ. अलका पसरीजा, डॉ. तमन्ना सेठी, डॉ. हनी सेठी, प्रो. धर्मवीर आदि उपस्थित रहे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अजीत समाचार	11.4.23	5	1-2

विद्यार्थियों के भविष्य को संवारने में कोई कसर न छोड़े शिक्षकः प्रो. काम्बोज

हिसार, 10 अप्रैल (विरेन्द्र वर्मा): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में मानव संसाधन प्रबंधन निदेशालय के सभागार में कैंपस स्कूल के शिक्षकों के लिए आयोजित 5 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का समापन हुआ, जिसमें मुख्यातिथि के तौर पर विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज उपस्थित हुए। यह प्रशिक्षण कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा प्रबंधन एकेडमी व मानव संसाधन प्रबंधन निदेशालय द्वारा संयुक्त रूप से 3 से 10 अप्रैल तक आयोजित किया गया। मानव संसाधन प्रबंधन निदेशालय की निदेशक डॉ. मंजू मेहता ने सभी का स्वागत किया। मुख्यातिथि प्रो. बी.आर काम्बोज ने बताया कि बदलते दौर के साथ शिक्षकों को भी अपने आप में बदलाव लाना जरूरी है। चाहे स्किल को बढ़ाने की बात हो या अपना ज्ञानवर्धन करने की। समय-समय पर शिक्षकों को कुछ नया सीखने व संबंधित विषय की गहनता से जानकारी प्राप्त करने की जरूरत है। तभी वो एक अच्छे शिक्षक बन सकेंगे, जिससे वे अपने विद्यार्थियों के भविष्य को संवारने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर पाएंगे। शिक्षकों के इसी प्रयास की बदौलत विद्यार्थी आगे चलकर अच्छे नागरिक बन सकेंगे। उन्होंने बताया कि शिक्षकों के लिए जरूरी है, जिस विषय पर भी वे काम कर रहे हैं उसके आइडिया अपने दिमाग में जरूर रखें। ताकि संबंधित विषय पर गहनता से जानकारी प्राप्त कर वे अपने आप को अपग्रेड करने के साथ-साथ उसको कक्षा के अंदर भी लागू जरूर करें। तभी वे विद्यार्थियों के अंदर भी परिवर्तन ला सकेंगे। उन्होंने शिक्षकों से आह्वान किया कि वे अपने अंदर नए बदलाव तो लाएं ही साथ ही दूसरे शिक्षकों के अंदर भी बदलाव लाने का प्रयास करें। साथ ही हर शिक्षक को चाहिए कि वे संबंधित विषय पर योजना जरूर तैयार करें, जिससे कि वे प्राप्त की गई जानकारी को कक्षा के अंदर बेहतर तरीके से विद्यार्थियों को समझा सकें। इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए विश्वविद्यालय की ओर से समय-समय पर शिक्षकों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया जाता है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक भास्कर	11.4.23	2	4-5

विद्यार्थियों के भविष्य को संवारने में कसर ना छोड़ें शिक्षक : प्रो. काम्बोज

भास्कर न्यूज | हिसार

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में मानव संसाधन प्रबंधन निदेशालय के सभागार में कैंपस स्कूल के शिक्षकों के लिए आयोजित 5 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का समापन हुआ, जिसमें बतौर मुख्यातिथि पहुंचे कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने बताया कि बदलते दौर के साथ शिक्षकों को भी अपने आप में बदलाव लाना जरूरी है। विद्यार्थियों के भविष्य को संवारने में शिक्षकों को कोई कसर नहीं छोड़नी चाहिए।

कैंपस स्कूल की निदेशिका संतोष कुमारी ने बताया कि 5 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम में शिक्षकों को विभिन्न विषय जैसे शिक्षण कौशल, प्रभावी पाठ्यक्रम योजना व प्रेरक कक्षा प्रबंधन, नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति, इनोवेटिव आइडिया और नवीनतम शिक्षण तकनीकियों के बारे में महत्वपूर्ण जानकारियां देकर प्रशिक्षित किया गया है। ताकि वें स्कूल में पढ़ रहे विद्यार्थियों का सर्वांगिण विकास कर सकें।

कैंपस स्कूल के प्राचार्य धूलीपाला सोमा शेखर शर्मा ने बताया कि इस ट्रेनिंग से कैंपस स्कूल के शिक्षक-शिक्षिकाओं को लाभ होगा। कैंपस स्कूल की कंप्यूटर विषय की शिक्षिका रेनू बाला ने प्रशिक्षण के दौरान प्राप्त जानकारियों व प्रशिक्षण संबंधी अपने अनुभवों को सभी के साथ साझा किया। प्रशिक्षण कार्यक्रम में 23 प्रतिभागियों को प्रमाण-पत्र देकर सम्मानित किया गया। इस अवसर पर, अनुसंधान निदेशक डॉ. जीतराम शर्मा, कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एसके पाहुजा, डॉ. केडी शर्मा आदि गणमान्य लोग मौजूद थे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अमर उजाला	11.4.23	4	3-4

बदलते दौर के साथ शिक्षकों को अपने में बदलाव करना जरूरी : प्रो. काम्बोज

शिक्षकों को 5 दिवसीय प्रशिक्षण में नई तकनीकों के बारे में बताया

माई सिटी रिपोर्टर

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में मानव संसाधन प्रबंधन निदेशालय के सभागार में कैंपस स्कूल के शिक्षकों के लिए आयोजित पांच दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम के समापन पर मुख्यातिथि कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया। यह प्रशिक्षण कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा प्रबंधन एकेडमी व मानव संसाधन प्रबंधन निदेशालय द्वारा संयुक्त रूप से 3 से 10 अप्रैल तक आयोजित किया गया। मानव संसाधन प्रबंधन निदेशालय की निदेशक डॉ. मंजू मेहता ने अतिथियों का स्वागत किया।

मुख्यातिथि प्रो. बीआर काम्बोज ने बताया कि बदलते दौर के साथ शिक्षकों को भी अपने आप में बदलाव लाना जरूरी है। चाहे स्किल को बढ़ाने की बात हो या अपना ज्ञानवर्धन करने की। स्कूल की निदेशिका संतोष कुमारी ने बताया कि शिक्षकों को शिक्षण कौशल, प्रभावी पाठ्यक्रम योजना, प्रेरक कक्षा प्रबंधन, नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति, इनोवेटिव आइडिया और नवीनतम शिक्षण तकनीकों के बारे में प्रशिक्षित किया गया। प्राचार्य धूलीपाला सोमा शेखर शर्मा ने बताया कि प्रशिक्षण कार्यक्रम में 23 प्रतिभागियों को प्रमाण-पत्र देकर सम्मानित किया गया।

कैंपस स्कूल में प्रतिभागियों को सम्मानित करते कुलपति प्रो. कांबोज। संवाद

इस अवसर पर अनुसंधान निदेशक डॉ. जीतराम शर्मा, डॉ. एसके पाहुजा, डॉ. केडी शर्मा, डॉ. बलदेव डोगरा, डॉ. नीरज कुमार, डॉ. मंजू नागपाल, वित्त नियंत्रक नवीन जैन मौजूद रहे। मंच संचालन जयंती टोकस ने किया।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक जागरण	11.4.23	2	2-5

विद्यार्थियों के भविष्य को संवारने में कसर न छोड़ें शिक्षक

जागरण संवाददाता, हिसार : हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में मानव संसाधन प्रबंधन निदेशालय के सभागार में कैंपस स्कूल के शिक्षकों के लिए आयोजित पांच दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का समापन हुआ। इसमें मुख्यातिथि के तौर पर विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज उपस्थित हुए। यह प्रशिक्षण कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा प्रबंधन एकेडमी व मानव संसाधन प्रबंधन निदेशालय द्वारा संयुक्त रूप से 10 अप्रैल तक आयोजित किया गया। मानव संसाधन प्रबंधन निदेशालय की निदेशक डा. मंजू मेहता ने सभी का स्वागत किया। मुख्यातिथि प्रो. बीआर काम्बोज ने बताया कि बदलते दौर के साथ शिक्षकों को भी अपने आप में बदलाव लाना जरूरी है। चाहे स्किल को बढ़ाने की बात हो या अपना ज्ञानवर्धन करने की। समय-

कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज द्वारा प्रतिभागी शिक्षक को सम्मानित करते हुए। ● पीआरओ

समय पर शिक्षकों को कुछ नया सीखने व संबंधित विषय की गहनता से जानकारी प्राप्त करने की जरूरत है। तभी वो एक अच्छे शिक्षक बन सकेंगे, जिससे वे अपने विद्यार्थियों के भविष्य को संवारने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर पाएंगे। शिक्षकों के इसी प्रयास की बदौलत विद्यार्थी आगे चलकर अच्छे नागरिक बन सकेंगे। उन्होंने बताया कि शिक्षकों के लिए जरूरी है, जिस विषय पर भी वे काम कर रहे हैं उसके आइडिया अपने दिमाग में जरूर रखें। कैंपस स्कूल की निदेशिका संतोष कुमारी ने बताया कि पांच दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम में शिक्षकों को विभिन्न विषय जैसे शिक्षण कौशल, प्रभावी पाठ्यक्रम योजना व प्रेरक कक्षा प्रबंधन, नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति, इनोवेटिव आइडिया और नवीनतम शिक्षण तकनीकियों के बारे में महत्वपूर्ण जानकारियां देकर प्रशिक्षित किया गया है। कैंपस स्कूल के प्राचार्य धूलीपाला सोमा शेखर शर्मा ने बताया कि इस ट्रेनिंग से कैंपस स्कूल के शिक्षक-शिक्षिकाओं को लाभ होगा। इस अवसर पर अनुसंधान निदेशक डा. जीतराम शर्मा, कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डा. एसके पाहुजा, स्नातकोत्तर अधिष्ठाता डा. केडी शर्मा, कृषि अभियांत्रिकी एवं तकनीकी महाविद्यालय के अधिष्ठाता डा. बलदेव डोगरा, कंप्यूटर शिक्षिका रेनू बाला, मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के अधिष्ठाता डा. नीरज कुमार व मानव संसाधन प्रबंधन निदेशालय की संयुक्त निदेशक डा. मंजू नागपाल एवं वित्त नियंत्रक नवीन जैन, जयंती टोकस, डा. जितेंद्र भाटिया मौजूद रहे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पंजाब केसरी	11.4.23	4	3-6

'विद्यार्थियों का भविष्य संवारने में कोई कसर न छोड़ें शिक्षक'

हकृवि के कैंपस स्कूल के शिक्षकों के लिए आयोजित 5 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम सम्पन्न

हिसार, 10 अप्रैल (ब्यूरो): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में मानव संसाधन प्रबंधन निदेशालय के सभागार में कैंपस स्कूल के शिक्षकों के लिए आयोजित 5 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का समापन हुआ, जिसमें मुख्यातिथि के तौर पर विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज उपस्थित हुए। यह प्रशिक्षण कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा प्रबंधन एकैडमी व मानव संसाधन प्रबंधन निदेशालय द्वारा संयुक्त रूप से 3 से 10 अप्रैल तक आयोजित किया गया। मानव संसाधन प्रबंधन निदेशालय की निदेशक डॉ. मंजू मेहता ने सभी का स्वागत किया।

मुख्यातिथि प्रो. बी.आर काम्बोज ने बताया कि बदलते दौर के साथ शिक्षकों को भी अपने आप में बदलाव लाना जरूरी है। चाहे स्किल बढ़ाने की बात हो या ज्ञानवर्धन की। समय-समय पर शिक्षकों को कुछ नया सीखने व संबंधित विषय की गहनता से जानकारी प्राप्त करनी चाहिए। शिक्षकों के लिए जरूरी है, जिस विषय पर भी वे काम कर रहे हैं उसके आइडिया अपने दिमाग में जरूर रखें। ताकि संबंधित विषय पर गहनता से जानकारी प्राप्त कर वे अपने आप को अपग्रेड करने के साथ-साथ उसको कक्षा के अंदर भी लागू जरूर करें। तभी वे विद्यार्थियों के अंदर भी परिवर्तन ला सकेंगे।

प्रतिभागी शिक्षक को प्रमाण-पत्र देकर सम्मानित करते कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज।

कैंपस स्कूल की निदेशिका संतोष कुमारी ने बताया कि 5 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम में शिक्षकों को विभिन्न विषय जैसे शिक्षण कौशल, प्रभावी पाठ्यक्रम योजना व प्रेरक कक्षा प्रबंधन, नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति, इनोवेटिव आइडिया और नवीनतम शिक्षण तकनीकियों के बारे में महत्वपूर्ण जानकारियां देकर प्रशिक्षित किया गया है, ताकि वे स्कूल में पढ़ रहे विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास कर सकें। ट्रेनिंग में विभिन्न विषयों से जुड़े विशेषज्ञों ने टीचिंग स्किल्स, टीमवर्क के महत्व, कम्युनिकेशन स्किल्स, क्लासरूम मैनेजमैंट सहित अन्य विषयों पर अपने व्याख्यान देकर महत्वपूर्ण जानकारी दी।

कैंपस स्कूल के प्राचार्य धूलीपाला सोमा शेखर शर्मा ने बताया कि प्रशिक्षण कार्यक्रम में 23 प्रतिभागियों को प्रमाण-पत्र देकर सम्मानित किया गया। इस अवसर पर, अनुसंधान निदेशक डॉ. जीतराम शर्मा, कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एस.के. पाहुजा, स्नातकोत्तर अधिष्ठाता डॉ. के.डी. शर्मा, कृषि अभियांत्रिकी एवं तकनीकी महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. बलदेव डोगरा, मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. नीरज कुमार व मानव संसाधन प्रबंधन निदेशालय की संयुक्त निदेशक डॉ. मंजू नागपाल एवं वित्त नियंत्रक नवीन जैन मौजूद रहे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय,
हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अमर उजाला	10.4.23	2	2,5

पूर्व से पश्चिम की दिशा में कतारों में बोई गई कपास देती है अधिक पैदावार

उन्नत कृषि तकनीक अपनाकर ले सकते हैं कपास की बेहतर पैदावार : प्रो. बीआर कांबोज

माई सिटी रिपोर्ट/संवाद न्यूज एजेंसी

हिसार/चरखी दादरी। खरीफ की नकदी फसलों में कपास का महत्वपूर्ण स्थान है। प्रदेश में लगभग 6 लाख हेक्टेयर क्षेत्र में कपास बोई जाती है, जिसकी औसत पैदावार 4-5 क्विंटल प्रति एकड़ है। पूर्व से पश्चिम दिशा की तरफ कतारों में बोई गई कपास की पैदावार सर्वाधिक होती है। अधिक मुनाफे के लिए अप्रैल में बिजाई की गई बीटी कपास में मूंग का अंतः फसलीकरण भी किया जा सकता है।

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर कांबोज ने बताया कि रेतीली, लूणी व सेम वाली भूमि को छोड़कर सभी प्रकार की भूमि में कपास की खेती की जा सकती है। जमीन अच्छी प्रकार से तैयार करने के लिए 3-4 जुताई पर्याप्त है। अधिक पैदावार लेने के लिए जुताई गहरी की जाए। पहली जुताई मिट्टी पलटने वाले हल से करनी चाहिए।

अनुसंधान निदेशक डॉ. जीतराम शर्मा ने बताया कि कपास की बिजाई 15 अप्रैल से जून के पहले सप्ताह तक की जा सकती है। मई का पूरा महीना कपास की बिजाई के लिए सर्वोत्तम है। महेंद्रगढ़, भिवानी तथा डबवाली जिलों में जहां मिट्टी रेतीली है और तेज हवा चलती है, वहां पर कपास की बिजाई अप्रैल के पहले पखवाड़े में करना उत्तम है।

ये हैं उन्नतशील किस्में

- अमरीकन कपास की उन्नत किस्में : एच 1098, एच 1117, एच 1226, एच 1098 संशोधित, एच 1236 व एच 1300
- अमरीकन कपास की संकर किस्में : एच एच एच 223 व एच एच एच 287
- देसी कपास की उन्नत किस्में : एच डी 123, एच डी 324 व एच डी 432
- देसी कपास की संकर किस्म : ए ए एच 1

संयुक्त ड्रिल या प्लांटर से करें बिजाई

आने वाले दिनों में बढ़ने वाले तापमान को देखते हुए किसान बिजाई छिड़काव विधि से कतई न करें। इससे बिजाई करने पर ताजा अंकुरित पौधा ज्यादा तापमान नहीं झेलने से खत्म हो जाएगा। बीज छिड़क कर बिजाई करने के बाद किसान बार-बार सिंचाई करें। जमीन में पांच से 10 इंच की गहराई में ज्यादा मात्रा में पोषक तत्व होते हैं। फसल कीट मित्र भी होते हैं। बिजाई, बीज-उर्वरक संयुक्त ड्रिल या प्लांटर की सहायता से करनी चाहिए। बीज को 4-5 सेमी गहरा बोएं। संकर व बीटी कपास के लिए कतार से कतार की दूरी 67.5 सेमी तथा पौधे से पौधे की दूरी 60 सेमी रखनी चाहिए। अथवा कतार से कतार की दूरी 100 सेमी व पौधे से पौधे की दूरी 45 सेमी रख सकते हैं। पूर्व से पश्चिम की दिशा में कतारों में बोई गई कपास अधिक पैदावार देती है। बिजाई से पहले स्ट्रैप्टोसाईक्लिन 1 ग्राम तथा सक्सीनिक तेजाब 1 ग्राम का 10 लीटर पानी में घोल बनाकर 6 से 8 किलोग्राम बगैर रोएंदार बीज का दो घंटे तक उपचार करें। जिन क्षेत्रों में दीमक की समस्या हो वहां उपर्युक्त उपचार के बाद बीज को थोड़ा सुखाकर 10 मिली क्लोरपाईरीफॉस 20 ईसी व 10 मिली पानी प्रति किलो बीज की दर से मिलाकर थोड़ा-थोड़ा बीज पर छिड़कें व अच्छी तरह से मिलाएं। बाद में 40 मिनट तक बीज को छाया में सुखाकर बिजाई करें।

■ खाद और बीज की मात्रा का रखें ध्यान

एचएयू के विशेषज्ञों के अनुसार अमेरिकन कपास में 35 किलोग्राम नाईट्रोजन व 12 किलोग्राम फास्फोरस डालें। संकर कपास व बीटी कपास में नाइट्रोजन 70 किलोग्राम, फॉस्फोरस 24 किलोग्राम तथा पोटेशियम 24 किलोग्राम डालें। देसी कपास में सिर्फ नाइट्रोजन 20 किलोग्राम प्रति एकड़ की दर से डालें। इसी तरह एक एकड़ के लिए रोएं उतारे बीज की मात्रा अमरीकन किस्म एचएस 6, एच 1098, एच 1117, एच 1226, एच 1236, एच 1098 संशोधित के लिए 6 से 8 किलोग्राम रोएं उतारे बीज प्रति एकड़ का उपयोग करें। बीटी संकर की किस्मों के लिए 850 ग्राम प्रति एकड़, संकर प्रजाति एचएचएच 223, एएचएच 1 के लिए 1.2 से 1.5 किलोग्राम बीज प्रति एकड़, एचएचएच 287 के लिए 1.750 किलोग्राम प्रति एकड़ व देसी किस्मों में एच डी 107, एच डी 123 व एच डी 324, एच डी 432 के लिए 5 किलोग्राम प्रति एकड़ डालें।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अमर उजाला	10.4.23	2	1

कृषि सलाह

नाइट्रोजन की कमी से सूखता है प्याज का तना

प्रश्न : प्याज का तना ऊपर से सूख रहा है?

-सुखविंदर सिंह, गगसीना-जिला करनाल

उत्तर : प्याज की फसल 130 से 140 दिन में तैयार होती है। इस वक्त प्याज की फसल पकने की तरफ अग्रसर है। हरियाणा में बोई गई प्याज अगले 20-25 दिन में कटने लगेगी। प्याज की फसल में बिजाई के वक्त उर्वरक का उपयोग होता है। बिजाई के 35 दिन बाद भी नाइट्रोजन की जरूरत होती है। नाइट्रोजन की कम मात्रा होने पर पत्तियों का उपरी हिस्सा सूखने लगता है। यह कोई रोग नहीं है। किसान समय-समय पर सिंचाई व खाद का ध्यान रखें तो यह समस्या नहीं आएगी। इस वक्त प्याज की जो फसल पक रही है, उसमें किसी प्रकार के उर्वरक की जरूरत नहीं है।

-डॉ. टीपी मलिक, विभागाध्यक्ष सब्जी विज्ञान विभाग-एचएयू, हिसार

प्रश्न : भिंडी की खेती में कितनी सिंचाई की जरूरत है?

-नरेश चुग, नारनौंद

उत्तर : भिंडी की फसल को अधिक देखभाल की जरूरत होती है। अप्रैल-मई में गर्मी बढ़ने के साथ ही सिंचाई भी अधिक करनी होती है। सामान्यतः हर 5 दिन के अंतराल पर खेत में पानी लगाना चाहिए। प्रयास करें कि शाम के वक्त खेत की हल्की सिंचाई करें। सिंचाई के बाद निराई-गुड़ाई का भी ध्यान रखें। सब्जी के खेत में खर-पतवार की वजह से बीमारियों का असर अधिक होता है।

-डॉ. टीपी मलिक, विभागाध्यक्ष, सब्जी विज्ञान विभाग-एचएयू-हिसार

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अमर उजाला	19-4-23		

खजूर की पत्ती से पता करें पौधा नर या मादा

एचएयू में 50 रुपये में खजूर के पौधों की हो रही जांच

खजूर के मादा पौधे में लगा फल।

4-5

वर्ष बाद फूल आने पर ही हो पाती हैं पौधों में नर या मादा की पहचान

माई सिटी रिपोर्टर

हिसार। शुष्क जलवायु (रेगीस्तानी) के फल खजूर के नर व मादा पौधों की पहचान एचएयू में मात्र 50 रुपये में होती है। एक बीजपत्री होने के कारण इसके नर पौधे में फल नहीं लगते, इसीलिए खेती करने वालों के लिए मादा पौधे की पहचान जरूरी होती है। एचएयू की वैज्ञानिक डॉ. पुष्पा खरब ने इसका तरीको खोजा था, जिस पर विश्वविद्यालय को पेटेंट भी मिला है।

यह जानकारी विश्वविद्यालय में बायो टेक्नोलॉजी विभाग की विभागाध्यक्ष रहीं डॉ पुष्पा खरब ने दी। डॉ. पुष्पा ने बताया कि सिंधु सभ्यता से ही किसान खजूर की खेती करते रहे हैं। एक बीजपत्री होने के कारण खजूर के पौधे में कायिक प्रवर्धन के लिए कलम बांधना (ग्राफ्टिंग), चश्मा चढ़ाना (बडिंग), गुटी व कलम तैयार करने का काम नहीं होता। इसलिए इस पौधे को तीन विधियों बीज, सकर्स और ऊतक संवर्धन (टिशू कल्चर) से ही उगाया जा सकता है।

किंतु बीज से उगे खजूर के पौधे की नर या मादा की पहचान 4 से 5 वर्ष बाद फूल आने पर ही हो पाती है। पौधों के डीएनए की गुणन उपरांत विशेष पद्धति की पहचान कर इस नई विधि से बीज से उगाए पौधे के जन्म पर ही नर या मादा की पहचान की जा सकती है। इससे

एचएयू की डॉ. पुष्पा खरब ने खोजा था पहचान का तरीका, मिला पेटेंट

एक बीजपत्री होने से केवल
- **मादा पौधे में ही लगते हैं फल**

दोनों में आते हैं फूल

नर पौधा | मादा पौधा

दक्षिणी हरियाणा में खेती के लिए उत्तम है मिट्टी व जलवायु

सीनियर सिटीजन क्लब हिसार के प्रांगण में वानप्रस्थ हिसार द्वारा आयोजित एक गोष्ठी में डॉ. पुष्पा खरब ने बताया कि खजूर शुष्क जलवायु में उगाया जाने वाला फलदार वृक्ष है। तुर्की-पर्शियन-अफगान पहाड़ियों और इराक के किरकुक-हाईफा समुद्री तट के इस वृक्ष की खेती दक्षिण हरियाणा के जिलों हिसार, भिवानी, महेंद्रगढ़, रेवाड़ी व चरखी दादरी के अलावा राजस्थान और गुजरात सहित देश के ऐसे क्षेत्रों में भी की जा सकती है, जो बहुत अधिक लवणीय हैं या जल निकासी की पर्याप्त व्यवस्था नहीं है या सिंचाई के लिए केवल लवणीय जल ही उपलब्ध है। ऐसी भूमि जो अन्य फसलों के लिए उपयुक्त नहीं है वहां खजूर की खेती की जा सकती है। इस